



पेइंग गेस्ट लड़की को बनाया बेड पार्टनर

“मैं पूना की एक बड़ी कंपनी में इंजिनियर हूँ। मेरी आयु 51 वर्ष, कद 5'10", रंग गोरा और बॉडी सुडौल है। मेरी पत्नी का नाम वंदना है, वो 50 वर्ष की 5'3" लम्बी, भरे बदन की है। हमारे दो बेटे हैं, बड़ा आकाश 25 वर्ष का है और बंगलौर में जॉब करता है, छोटा अम्बर [...] ...”

Story By: (rajababuindia1970)

Posted: Thursday, December 14th, 2006

Categories: [कोई मिल गया](#)

Online version: [पेइंग गेस्ट लड़की को बनाया बेड पार्टनर](#)

पेइंग गेस्ट लड़की को बनाया बेड पार्टनर

मैं पूना की एक बड़ी कंपनी में इंजिनियर हूँ। मेरी आयु 51 वर्ष, कद 5'10", रंग गोरा और बाँडी सुडौल है।

मेरी पत्नी का नाम वंदना है, वो 50 वर्ष की 5'3" लम्बी, भरे बदन की है।

हमारे दो बेटे हैं, बड़ा आकाश 25 वर्ष का है और बंगलौर में जॉब करता है, छोटा अम्बर 23 वर्ष का है और बंगलौर में ही एम बी ए कर रहा है।

दोनों भाई इकट्ठे अपने 3 बेडरूम के फ्लैट में रहते हैं, जो मैंने दो वर्ष पहले खरीदा था।

जब तक बेटे हमारे साथ पूना में रहते थे, तब तक मेरी पत्नी का दिन आसानी से कट जाता था।

दोनों बेटों के जाने के बाद उसके लिए दिन काटना भी भारी लगने लगा तो हमने सोचा कोई कि पेइंग-गेस्ट रख लें जिससे कुछ पैसा भी आएगा और वंदना का मन भी लगा रहेगा।

जब पेइंग-गेस्ट रखने की बात चली तो मैंने और वंदना ने तय किया कि हम लोग सिर्फ दो लड़कियों को रखेंगे क्योंकि लड़कों के साथ तो हम 25 वर्ष से रह ही रहे थे और चूँकि हमारी कोई बेटी नहीं थी इसलिए भी हमें लड़कियाँ रखने में ज्यादा रूचि थी।

खैर जहाँ चाह वहाँ राह !

जल्दी ही दो लड़कियाँ पेइंग-गेस्ट के रूप में हमारे घर में आ गईं।

एक का नाम राधिका और दूसरी का नाम मनमीत था।

राधिका आगरा और मनमीत लखनऊ की रहने वाली थी।

दोनों एम बी ए कर रही थीं लेकिन अलग अलग कॉलेज से। दोनों के कॉलेज आने जाने का समय अलग अलग था पर इससे हमें कोई दिक्कत नहीं थी।
अब वंदना को घर में रौनक दिखने लगी थी।

देखते देखते छः महीने कैसे गुज़र गए, पता ही नहीं चला।

कहते हैं कि ऊपरवाले को जो करना होता है, वो वैसे हालात पैदा कर देता है।

हमारे यहाँ सब कुछ सामान्य चल रहा था कि राधिका के कॉलेज में एक महीने की छुट्टियाँ हो गईं और वो अपने घर आग़रा चली गईं।

इसके दो दिन बाद ही बंगलौर से आकाश का फ़ोन आया कि अम्बर की तबियत खराब है अगर हो सके तो मम्मी को भेज दीजिये ताकि उसकी देखभाल हो सके।

अगले दिन की पहली फ़्लाईट से वंदना बंगलौर चली गईं।
अब घर में रह गए मैं और मनमीत।

हमारे घर के मुख्य द्वार की दो चाबियाँ हैं, एक मैंने अपने पास रखी और एक मनमीत को दे दी। इससे घर वापस आने जाने में कोई दिक्कत रही नहीं।

खाने के लिए मैंने टिफिन सर्विस वाले से कह दिया।
इस तरह वंदना के न रहने पर भी मैंने सब व्यवस्था कर ली।

वंदना को गए हुए दो दिन बीते थे कि रात को दो बजे मैं पेशाब करने के लिए उठा तो मनमीत के कमरे से बातें करने की आवाज़ आ रही थी।

चूँकि राधिका यहाँ थी नहीं इसलिए मैंने सोचा देखूँ किस से बातें कर रही है।

मनमीत के कमरे के पास जाकर ध्यान से सुना तो पता चला कि अपनी किसी सहेली के साथ मोबाइल पर बात कर रही थी.

बात का सारांश यह था कि मनमीत की सहेली हमारे घर के खालीपन का लाभ उठाकर अपने बॉयफ्रेंड को हमारे घर लाकर चुदवाना चाहती थी, जिसका मनमीत यह कहकर विरोध कर रही थी कि मेरे आंटी-अंकल मुझ पर इतना विश्वास करते हैं कि पूरा घर मेरे हवाले कर देते हैं, मैं उनके साथ धोखा नहीं कर सकती।

यह सब सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा लेकिन उनकी बातों का सिलसिला अभी खत्म नहीं हुआ था।

मनमीत के उत्तर सुनकर यह अंदाज़ हो जाता था कि उसकी सहेली ने क्या कहा होगा। मनमीत की बातों को ध्यान से पढ़िये आप भी समझ जायेंगे।

“नहीं यार मैंने कह दिया न कि मैं तुम्हें अपने घर नहीं ला सकती !”

...

“हट, मैं क्यूँ चुदवाऊँ तेरे यार से ?”

...

“होती है, लेकिन चूत में खुजली होने का मतलब ये तो नहीं कि मैं ऐसे गैरे नत्थू खैरे किसी से भी चुदवा लूँ ?”

...

“तुम्हारी सोच गन्दी है तान्या, मैंने आज तक चुदवाना तो दूर किसी को अपनी चूत की झलक भी नहीं दिखाई है !”

...

“अमित अंकल ऐसे आदमी नहीं हैं, वो मुझे अपनी बेटी की तरह मानते हैं !”

...

“अमित अंकल अगर मेरे अंकल नहीं होते तो मैं उनसे शादी जरूर कर लेती।”

...

“वो मुझसे 25 साल बड़े हैं तो क्या हुआ, 50 साल भी बड़े होते तो भी कर लेती, तुम क्या जानो, वो बाहर से जितने सुन्दर हैं अन्दर से उससे भी ज्यादा सुन्दर हैं।”

...

“अरे यार मैंने कह दिया न मैं तुम्हें अपने घर नहीं ला सकती, तू समझती क्यों नहीं ?”

...

“तू कहे तो मैं अभी चली जाऊँ अंकल के कमरे में, राधिका भी नहीं है और आंटी भी नहीं, बस मैं और अंकल दो ही लोग हैं घर में !”

...

“तू आ जा ! अंकल से चुदवा कर देख ले कि वो चोद पाते हैं या नहीं !”

...

“तू फ़ोन रख यार, अपना भी मूड खराब कर रही है और मेरा भी, चूत भी पूरी तरह गीली हो गई है, उंगली मांग रही है।”

इतना कहकर मनमीत ने फ़ोन काट दिया और उठकर बाथरूम चली गई।

मैं लौटकर अपने कमरे में आया तो नींद मुझसे कोसों दूर जा चुकी थी, जिस मनमीत को मैं अपनी बेटी जैसी मानता था उसकी बातें सुनकर मेरा दिमाग घूम चुका था और मैं उसे चोदने की योजना बनाने लगा।

मैं सुबह नौ बजे घर छोड़ देता था जबकि मनमीत 11 बजे निकलती थी।

वो उठकर मेरे कमरे में आती, अखबार ले जाती और पढ़कर वापस मेरे कमरे में रख जाती।

आज मैं जानबूझ कर आठ बजे घर से निकल गया जब वो सो रही थी।

मैंने अपने तकिये पर 60 पेज की एक किताब रख दी थी, जिसमें चुदाई की कहानियाँ थीं, मैं मनमीत को यह बताना चाहता था कि मैं उतना सीधा नहीं हूँ जितना वो समझती है।

दोपहर को दो बजे मैं घर आया तो न्यूज़ पेपर और किताब दोनों अपनी अपनी जगह पर रखे हुए थे लेकिन उनकी प्लेसमेंट बदल गई थी।

मनमीत उस किताब को पढ़कर भी शायद यह दिखाना चाहती थी कि उसने वो किताब नहीं देखी है।

शाम को पांच बजे जब वो कॉलेज से लौटी, चाबी से दरवाजा खोलकर अन्दर आई तो मुझे घर में देखकर हैरान होते हुए बोली- आप आज जल्दी आ गए ?

फिर उसने मुझसे चाय के लिए पूछा और चाय बनाने लगी।

एक बात मैंने नोटिस की कि वो मुझे बार बार आप कहकर संबोधित कर रही थी, आज उसने एक बार भी अंकल शब्द का प्रयोग नहीं किया था।

चाय पीने के बाद हम लोग टी वी पर क्रिकेट मैच देखने लगे।

मैं सोफे पर बैठा था और वो सोफे की साइड चेयर पर!

उससे मैंने अपने बगल में बैठने को कहा तो वो मेरे बगल में आकर बैठ गई।

मैंने उससे कहा- मनमीत, जब से तुम इस घर में आई हो मैं तुमसे एक बात करना चाहता हूँ लेकिन कभी मौका ही नहीं मिला, अगर तुम कहो तो कह दूँ।

मनमीत बोली- कह दीजिये !

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और कहना शुरू किया- यह बात लगभग 25 वर्ष पहले की है जब मैं कॉलेज में पढ़ता था, मेरे साथ एक लड़की पढ़ती थी उसका नाम मनमीत था,

वो भी तुम्हारी तरह लम्बी, गोरी और दुबली पतली सरदारनी थी। मैं उसे प्यार से मनु कहता था। हम दोनों घंटों इसी तरह हाथ पकड़ कर बातें करते रहते थे, कभी कभी मैं अपनी बांह इस तरह उसके गले में डालता तो वो अपना सिर इस तरह मेरे सीने से लगा देती थी।

इतना कहते कहते मैंने अपनी बांह उसके गले में डालकर उसका सिर अपने सीने से लगा दिया और फिर बोला- हम लोग थोड़ी बहुत शरारत भी कर लेते थे। मैं उसके स्तन दबाता तो वो उछल जाती थी।

यह कहते कहते मैंने उसका बायाँ स्तन दबा दिया और पूछा- तुम्हें बुरा तो नहीं लगा ना ?

उसके उत्तर का इंतज़ार ना करते हुए मैंने उसके सिर पर चुम्बन किया और बोला- उसके सिर से भी मेहँदी की ऐसी ही खुशबू आती थी।

इतना कहकर मैं शांत हो गया जैसे मैं किन्हीं यादों में खो गया हूँ।

कुछ देर बाद वो बोली- फिर क्या हुआ ?

मैंने कहा- कुछ नहीं! हमारे प्यार का आखिरी दिन आ गया, कॉलेज बस से हम लोग पिकनिक पर जा रहे थे, हमारी बस एक टैंकर से टकरा गई और 6 विद्यार्थी मर गए जिनमें मनमीत भी थी। जब तुम यहाँ आई और अपना नाम मनमीत बताया तो मुझे लगा मेरी मनमीत आ गई! वही नाम, वही रंग, वही रूप, वही सदा मुस्कुराता चेहरा। तुमसे और राधिका से जो पैसा अभी तक मैंने लिया है, उसमें से राधिका का पैसा तो मैंने खर्च कर लिया, तुम्हारे पैसे पहले दिन से यह सोचकर अलग रखता रहा कि जब तुम जाओगी तो तुम्हारे ही पैसे से तुम्हें कोई गिफ्ट ले दूंगा ताकि तुम मुझे याद रख सको।

भावुक होकर बोली- आपने यह कैसे समझ लिया कि एक मनमीत आपकी ज़िन्दगी से चली

गई तो दूसरी भी चली जायेगी ।

मैंने उसे अपनी बांहों में भर लिया और चुम्बनों की बौछार कर दी ।

शाम के सात बज चुके थे, मैंने मनमीत से कहा- चलो, बाहर खाना खाकर आते हैं ।

रात को 9.30 पर खाना खाकर हम वापस आये तो मैंने वंदना की अलमारी से उसका वो लाल सूट निकाला जो उसने अपनी शादी के दिन पहना था और अब इसलिए सम्भालकर रखा था कि आकाश की दुल्हन पहनेगी ।

मैंने वो लाल सूट मनमीत को देते हुए कहा- मनु यह सूट पहन कर आओ ! देखूँ कैसी लगती हो !

जब सूट पहन कर मनमीत लौटी तो मुझ पर बिजली गिर गई ।

बोली- कैसी लग रही हूँ ?

मैंने कहा- बहुत सुन्दर ! बस एक कमी है !

उसने पूछा- क्या ?

तो मैं उसे पकड़कर घर में बने मंदिर में ले गया और चुटकी भर सिंदूर उसकी मांग में भर दिया और उसे गोद में उठाकर अपने बेडरूम में ले आया और अपने पलंग पर बैठा दिया ।

मैंने अपनी टी-शर्ट और पैट उतार दी, अब मेरे शरीर पर सिर्फ छोटा सा अंडरवियर था, बनियान मैं पहनता ही नहीं ।

मनमीत के पास जाकर मैंने उसे खड़ा किया और अपने सीने से लगा लिया ।

मेरे नंगे सीने में वो समा गई, उसके माथे पर एक चुम्बन देकर मैंने उसके होठों पर अपने होंठ रख दिए और अपने दोनों हाथों से उसके चूतड़ों को दबाने लगा, वो मुझसे लिपटती

जा रही थी।

उसका लाल रंग का दुपट्टा उतारकर मैंने कुर्सी पर फेंका तो देखा कि उसकी धड़कनों की वजह से उसके मम्मे उछल रहे थे।

धीरे धीरे उसका कुरता उतारा और फिर ब्रा के हुक खोल कर उसके मम्मे आजाद कर दिए।

उसके मम्मे जब मेरे सीने से लगे तो ऐसा लगा जैसे धरती पर स्वर्ग उतर आया हो।

अब मैं पलंग पर बैठ गया और मनमीत का एक चुचूक अपने मुंह में ले लिया और उसकी सलवार का नाड़ा खोल दिया, जरीदार सलवार अपने आप उतर गई।

अब मनमीत के शरीर पर सिर्फ मैरून रंग की पैंटी थी, वो भी मैंने उतार दी।

मनमीत का नंगा जिस्म मुझमें जवानी का जोश भर रहा था, इतना जोश शायद पहली बार वंदना को चोदते समय भी नहीं रहा होगा। मनमीत की चूत के होठों पर अपनी ऊँगली फेरी तो देखा चूत बुरी तरह से गीली हो चुकी थी।

मैंने कमरे में आने से आधा घंटा पहले सेक्स की गोली खाई थी जो अपना पूरा असर दिखा रही थी, मेरा लंड तनकर लम्बा और 3 इंच मोटा हो चुका था।

अब ज्यादा देर करना मुनासिब नहीं था इसलिए मैंने मनमीत को पलंग पर लिटाया और तकिये पर एक पुराना टॉवेल बिछाकर तकिया मनमीत की गांड के नीचे रख दिया। मनमीत की दोनों टांगें घुटनों से मोड़कर मैं उसकी टांगों के बीच में आ गया और अपने लंड का सुपारा मनमीत की चूत के मुंह पर रख दिया।

लंड के सुपारे को थोड़ी देर तक मनमीत की चूत पर रगड़ने के बाद मैंने पूछा- जान, डाल दूं?

मुंह से तो मनमीत कुछ नहीं बोली लेकिन आँखों से इशारा कर दिया कि हाँ डाल दो।

अब क्या हुआ कि पहले झटके में आधा और दूसरे झटके में पूरा लंड मनमीत की चूत के अन्दर हो गया, कल तक जो लंड वंदना का था, आज मनमीत का हो चुका था।

लगभग बीस मिनट तक मनमीत की चुदाई करने के बाद मैंने अपना लंड उसकी चूत से बाहर निकाला, मनमीत की चूत फटने से जो खून निकला था उस से मेरा लंड सराबोर था।

पुराने तौलिए से लंड को पोंछकर उस पर कंडोम चढ़ाया क्योंकि मनमीत की चूत में डिस्चार्ज करना ठीक नहीं था।

लंड पर कंडोम चढ़ाकर मैं फिर से मनमीत पर चढ़ गया।

यकीन मानिए वंदना को चोदने में कभी भी ये मज़ा नहीं मिला था।

आधे घंटे की चुदाई के बाद भी डिस्चार्ज नहीं हुआ था, वाह री गोली!

खैर चोदते चोदते धक्के मारते मारते वो पल भी आ गया जब मेरे लंड से पिचकारी छूटी और पूरा कंडोम मेरे वीर्य से भर गया।

उस रात में मैंने मनमीत को चार बार चोदा और हर बार चुदाई का समय बढ़ता गया।

अगले दिन हम दोनों ने छुट्टी की और दिन भर चुदाई का मज़ा लिया।

इसके बाद मैंने वंदना को बंगलौर में बेटों के पास सेटल कर दिया और मनमीत आज मेरी पत्नी की हैसियत से मेरे साथ रह रही है।

rajababuindia1970@yahoo.com

Other stories you may be interested in

चूतों का मेला मेरा लंड अकेला

फैमिली Xxx चुदाई कहानी में पढ़ें कैसे मैंने मैंने अपनी बहनों को लेस्बियन सेक्स करते देखा। पता चला कि मेरी पांचों बहनें लंड की प्यासी हैं। तो मैंने क्या किया? दोस्तो, मेरा नाम अजय है। मेरी हाइट 5.5 फीट है।

[...]

[Full Story >>>](#)

पहली बार बड़ी बहन ने मेरा लंड चूसा

ब्लोजॉब सेक्स का मजा मुझे पहली बार मेरे मामा की बेटी ने मुझे दिया। वो शादीशुदा थी। हम दोनों आपस में खुल चुके थे और चुदाई का मजा लेना चाहते थे। अन्तर्वासना के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार! मेरा नाम

[...]

[Full Story >>>](#)

कामुक भतीजी को चोद कर कली से फूल बनाया

सेक्सी हॉट बेब की चूत चुदाई का मौका मुझे मिला जब मेरी भतीजी को चोट लग गयी। मैंने उसकी मालिश की तो उसकी गांड देखकर मेरा लंड खड़ा हो गया। दोस्तो, मेरा नाम राकेश है, मैं उत्तर प्रदेश के गोरखपुर

[...]

[Full Story >>>](#)

ननदोई ने सलहज की चुत चोदकर गर्भवती किया

साड़ी वाली भाभी की चुदाई कहानी एक ऐसी सलहज की है जो संतान सुख के लिए अपने ननदोई से चुद गयी। भाभी की साड़ी उठाकर चोदने का आनन्द इस कहानी में लें। दोस्तो, मैं आपका अपना दोस्त अरुण एक बार [...]

[Full Story >>>](#)

सामने रहने वाली लड़की को पटाकर चोदा

देसी सेक्सी गर्ल चुदाई कहानी मेरे घर के सामने आयी एक लड़की से दोस्ती करके उसके साथ सेक्स की है। वो लड़की मस्त मौला किस्म की थी। मेरा नाम रोहन राय है। मैं कॉलेज के तीसरे वर्ष में हूँ। मैं [...]

[Full Story >>>](#)

